कुमार जीवन - 59

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ कुमार हैं ही उड़ती कला वाले। **जो सदा निर्बन्धन हैं वही उड़ती कला वाले हैं। तो निर्बन्धन कुमार हो। मन का भी बन्धन नहीं।** तो सदा बन्धनों को समाप्त कर निर्बन्धन बन उड़ती कला वाले कुमार हो? कुमार अपनी शरीर की शक्ति और बुद्धि की शक्ति दोनों को सफल कर रहे हो? लौकिक जीवन में अपने शरीर की शक्ति को और बुद्धि की शक्ति विनाशकारी कार्यों में लगाते रहे। और अब श्रेष्ठ कार्य में लगाने वाले। हलचल मचाने वाले नहीं। लेकिन शान्ति स्थापन करने वाले। ऐसे श्रेष्ठ कुमार हो?

➳ _ ➳ कभी लौकिक जीवन के संस्कार इमर्ज तो नहीं होते हैं? **अलौकिक जीवन वाले, नये जन्म वाले। तो नये जन्म में पुरानी बातें नहीं रहतीं। आप सभी नये जन्म वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो। कभी भी अपने को साधारण न समझ शक्तिशाली समझो।** संकल्प में भी हलचल में न आना। ऐसे तो क्वेश्चन नहीं करते हो कि व्यर्थ संकल्प आते हैं क्या करें? भाग्यवान कुमार हो। 21 जन्म भाग्य का खाते रहेंगे। स्थूल-सूक्ष्म दोनों कमाई से छूट जायेंगे। **(25-12-1985)**

➢➢ जीवन की पुरानी बातों को भुलाने के लिए क्या करें ?

➳ _ ➳ अशरीरीपन की स्थिति का अभ्यास

→ पुरानी बातों को Delete करने का

- सबसे कारगार हथियार
- सबसे शक्तिशाली विधि

➳ _ ➳ स्व का अभ्यास

→ स्व का स्वरुप

→ स्व की स्थिति

→ स्व का नशा

→ स्व की स्मृति

➳ _ ➳ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास

→ शुद्ध संकल्पों का स्टॉक जमा करो

➳ _ ➳ ड्रामा की स्मृति

→ रात गयी बात गयी

➳ _ ➳ स्वयं को लक्ष्मी नारायण के स्वरुप में टिकाना

➳ _ ➳ अपने लक्ष्य को सदैव स्मृति में रखिये

➳ _ ➳ स्वदर्शन चक्र फिराना

➳ _ ➳ खुद को बिजी रखना

→ कोई भी ज्ञान का पॉइंट खुद को दीजिये

- और उसका विस्तार कीजिये

➳ _ ➳ मन और बुधी को अलग अलग लक्ष्य दीजिये

→ नहीं तो मन

- या तो Past में चला जाता है
- या फिर Future में चला जाता है

➳ _ ➳ जीवन में नयी आदतों का निर्माण करें

→ लिस्ट बनाइये की

- मैं स्वयं में कौन कौन सी नयी आदतों का निर्माण करू
  - ▶ जिससे मुझे फायदा हो

→ दूसरों के जीवन की अच्छी आदतों को देखिये

- और फिर उसे स्वयं के जीवन में धारण कीजिये

➳ _ ➳ दूसरों की विशेषताओं को

→ देखिये

→ सुनिए

→ वर्णन कीजिये

➳ _ ➳ परमात्म प्रेम बढाइये

→ check कीजिये की

- बाबा से अभी तक किस समबन्ध का अनुभव नहीं किया है

➳ _ ➳ लोकिक में समबंधो में... कितने संघर्ष से ... समबंधो में invest किया था

→ पर उससे कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ

→ लोकिक संबंधो से सम्बन्ध बढाने पर हुए फायदों और नुक्सान पर चिंतन कीजिये

- दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा

➳ _ ➳ Sharing कीजिये परमात्मा से

→ व्यक्तियों से नहीं

- आत्मा की उन्नति तभी होती है जब आत्मा अकेली चलती है
- जीवन के विघनो का मुख्य कारण है :- देहधारियों में फंसना

➳ _ ➳ इस दुनिया से वैराग उत्पन्न कीजिये

→ हम स्वयं ही स्वयं को वैराग दिलाना होगा

- दूसरो का थोपा हुआ वैराग हमें आगे नहीं बड़ा सकता

➳ _ ➳ परिस्थितियों को अपना टीचर बनाइये

→ बाकियों ने बहुत सीखाने की कोशिश की पर हम नहीं सीखे

- पर अब तो शिक्षा लो

➳ _ ➳ स्वयं स्वयं को माफ़ कीजिये

→ स्वयं से घृणा / नफरत मत कीजिये

➳ _ ➳ समय की स्मृति

→ समय कौनसा चल रहा है ?

- और हम कर क्या रहे है ?

➳ _ ➳ सांसारिक जीवन और सांसारिक परिस्थितियों के प्रति अनुमान मत लगाइए

→ सिर्फ स्वयं को स्वयं के सत्य स्वरुप में स्थित कीजिये